पुलिस कस्टडीमे भगवान

– डॉ. शिव कुमार मिश्र
(बिहार रिसर्च सोसाइटी, पटना संग्रहालय, पटना)

कतोक बेर प्रोफेसर निराला सर कहने छलाह जे अन्धरामठ थाना एक बेर अवश्य देखल जाए। प्रो. नरेन्द्र नारायण सिंह 'निराला' आर.के. कॉलेज, मधुबनीक इतिहास विभागक अध्यक्ष पदसँ रिटायर्ड छथि, मुदा मिथिलाक धरोहरिक प्रति हुनका मोनमे अगाध प्रेम छनि। सदिखन एहि लेल चिन्तित रहैत छथि जे मिथिलाक धरोहरिक सुरक्षा कोना हएत!

धरोहर सेनानी डॉ. सुशान्त कुमारक संग कतोक बेर नेआर कएने रही जे अंधरामठ थानामे बन्द भगवानक दर्शन कएल जाए, से सुअवसर आबिए गेल आ हम दुनू गोटे दिनांक 13 मार्च, 2022 कें दरभंगासँ चलि इसहपुर डीहक अवलोकन कएलोपरान्त पाहीटोलमे अमल झाकें छोड़ैत अंधरामठ दिस विदा भेलहुँ। बाटमे कमला-बलानक सुखाएल धार टपैत झंझारपुर, अररिया-संग्राम, खोपा पार करैत फुलपरास पहुँचलहुँ। ताधरि सुशान्तजी ओ ड्राइवर किछु पानि पीबाक इच्छा व्यक्त करए लगलाह। हमरा मोन पड़ल जे एहि चौकपर रसगुल्लाक नीक दोकान छैक। हमसभ ओहि दोकानमे जाकऽ मधुर लेल आ पुनः उच्चपथ पकड़ि भुतहा दिस बढ़ि गेलहुँ। बाटमे पूर्ण सुखाएल भुतही-बलान टपैत भुतहासँ बामा दिस कुनौली पथपर बढ़लहुँ।

भुतहा-कुनौली पथ अत्यन्त उभर-खाभर मार्गपर गाड़ी चलय लागल, तँ मोन पड़य लागल जे प्रायः तीस बर्ख पहिने जहिया राष्ट्रीय उच्चपथ नहि बनल छल, हम मोटरसाइकिलसँ कुनौली गेल रही। ताहि समय मार्ग नीक छल, मुदा एखन बुझना जाइत छल जे मार्गकें कोड़ि कऽ छोड़ि देल गेल अछि। मार्ग जोतल खेत जकाँ बुझा रहल छल। गर्दा-माटिसँ सम्पूर्ण देह-माथ, कपड़ा-लत्ता भरि गेल। अँधरामठसँ किछु पहिने ओहि पथकें छोड़ि बामा लौकही-भवानीपुर पथ दिस विदा भेलहुँ। बाटमे कतोक लोकसभसँ भवानीपुरक विषयमे पुछैत गेलहुँ। भवानीपुरमे पछिला साल एकटा दुर्लभ मूर्ति भेटल छल। किछु पत्रकार सभसँ एहि विषयमे जनतब भेटल छल।

कोरोना महामारीक बन्दीक समय पछिला वर्ष विष्णुक प्रतिमा भेटलाक बाद जिलाधिकारी, मधुबनी; अनुमंडलाधिकारी, फुलपरास; थाना प्रभारी, लौकही; प्रखंड विकास पदाधिकारी, लौकही आदि कतोक अधिकारी सभसँ आग्रह कएल गेल छल जे विष्णुक प्रतिमाकें सरकारी संग्रहालयमे रखबाओल जाए, मुदा एहि दिशामे कोनो खास प्रगति नहि भेल। भवानीपुरक तत्कालीन मुखियापति चन्द्रगुप्त साह अपना घरक आगूमे मंदिर निर्माणकऽ ताहिमे विष्णुक मूर्तिकें सीमेंटसँ जामकऽ राखि देलनि। पूजा-पाठ शुरू भऽ गेल। एखनधरि एहि मूर्तिक दर्शन नहि भेल छल। हम दुनू गोटे एहि निमित्तें भवानीपुर पंचायतक मुखियाजीक आवासपर पहुँचलहुँ। पूर्व मुखियाजी पछिला चुनाओमे कनेक भोटसँ हारि गेल छलीह, हुनक पतिदेवकें मुखियाजी कहल जाइत अछि।

ओ बजलीह – "मुखियाजी नेपाल गेल छथि, भेट नहि हएत।"

हम पुछलियनि – "भगवानक मूर्ति देखबाक अछि।"

निर्माणाधीन मंदिर दिस संकेत करैत कहली – "मंदिरमे देख लेल जाओ।"

हम पुछलियनि – "चाभी कतय अछि?"

कहली – "ताला नहि छैक, फुजले छैक।"

सुशान्तजीकें संकेत करैत हम मंदिर दिस गेलहुँ। ग्रिल ओठङाएल छल। ग्रिलकें हँटबैत मंदिरमे दुनू गोटे प्रवेश कएल। जाहि भगवानक दर्शनक कतोक माससँ प्रतीक्षा छल, से समक्ष छलाह। दुर्लभ प्रतिमा! सुशान्तजी माप लेबय लगलाह। मूर्तिक आकार 101x50x6 से.मी. छल। विष्णुक मूर्ति विलक्षण ओ अद्भुत अछि। चतुर्भुज विष्णु अपन चारू हाथमे शंख, चक्र, गदा, ओ पद्म लऽ कमलक फूलपर स्थानक मुद्रामे ठाढ़ छथि। पाछू शिलापीठिकामे कटाओ अछि, मुदा शिलापीठिकाक शीर्ष गोल मेहराव सन अछि। शिलापीठिकाक शीर्षपर कोनो चित्र नहि, अपितु दुनू दिस उड़ैत गंधर्वक अंकन अछि। कानमे कुण्डल, गरदनिमे हार, कान्हपर जनेउ, डाँड़मे डरकस ओ धोती ठेहुनक नीचाँ, वनमाल, बाँहिमे कंगन, पएरमे पायल छनि। विष्णुक बामामे सरस्वती ओ दहिनामे लक्ष्मी त्रिभंग मुद्रामे वस्त्र ओ

आभूषणसँ सजल छथि। शंखपुरुष ओ चक्रपुरुषक अंकनक अभाव अछि। सरस्वतीक नीचाँ गरुड़ ओ लक्ष्मीक नीचाँ दाताक अंकन अछि। कमलक नीचाँ चिक्कन अछि। मूर्तिक पाछू शिलापीठिका खतल अछि आ शीर्ष गोल अछि जाहिसँ विशेषज्ञ लोकनिमे भ्रम भेलनि जे ई मूर्ति पालकालक अछि, मुदा डॉ. जलज कुमार तिवारीजी, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, वैशाली संग्रहालयक सहायक अधीक्षण पुरातत्वविद्, स्पष्ट कएलनि जे ई प्रतिमा अन्तिम कर्णाट शासकक कालक थिक।

बेलही-भवानीपुरक विष्णु भगवानक दर्शन करबाक काल मुखियाजीक पटीदार ललित साह एलाह आ कहय लगलाह जे गामक पुबारी कात स्थित खीरी पोखरिसँ माटि काटवाक क्रममे ई विष्णु भगवानक मूर्ति भेटल छल जकरा पूर्व मुखियापति चन्द्रगुप्त साह अपना ओहिठाम आनि घरक समक्ष मंदिर बना रहल छथि। ओ कहलनि जे मंदिर अपन खर्चपर बना रहल छथि। फेर साहजी हमरा लोकनिकें चाह आ पनपिआइक आग्रह कएलनि। मंदिर समक्ष जे पूर्व मुखियाक घर छनि, ताहिमे सी.सी. टी.वी. कैमरा लागल छैक। सुरक्षाक इन्तजाम देखि मोन प्रसन्न भेल।

हमरा लोकनि ओतयसँ विदा भऽ आब अंधरामठ दिस चललहुँ। बाटमे गप्प करैत गेलहुँ जे ललित साह कतेक शालीनतापूर्वक सहयोग केलनि। एकहु बेर कोनो तरहक बाधा वा बितंडा नहि ठाढ़ केलनि। सहयोगक संगहिं चाह आ जलखै लेल सेहो आवेश केलनि। मुदा, जखन कोनो ब्राह्मणक गामक मूर्ति देखऽ लेल जाइत छी तँ अनादरक कोनो प्रयास नहि छोड़ैत छथि। कपड़ा नहि हँटाएब, फोटो नहि खिचय देब, मूर्तिक माप नहि लेबय देब, छूबय नहि देब प्रभृति कतोक नकारात्मक प्रश्नसभ सँ सामना करऽ पड़ैछ। चाह-जलखै लेल के पूछत? अपितु एकटा शत्रु जकाँ व्यवहार कएल जाइछ।

ई सभ चर्चा करैत हमरा लोकनि भुतहा-कुनौली पथपर चढ़ि बामा दिस चलि अंधरामठ चौक पहुँचि गेलहुँ। थाना दए पुछारी कएल तँ कहल गेल जे बान्हक पच्छिम पुरनका थाना ओ बान्हक पूब किछु दूर गेलापर नवका थाना अछि। बान्हपर सँ पुरनका थाना परिसरमे मंदिर देखबामे आएल। हमरा लोकनि बान्हसँ उतरि मंदिर गेलहुँ तँ मंदिरक ग्रिलमे दूटा ताला लागल। पुजारीजीक पुछारी कएल तँ पता चलल जे चौकपर माला बेचय गेल छथि। एकटा सिपाहीजीसँ पूछल तँ कहलनि जे कतहु गेल छथि। हम हुनक मोबाइल नं. पूछल तँ कहलनि जे नहि अछि। फेर ओ कहलनि जे एहिठाम पुरान थानाक भवन छैक आ हमरा सभ चारिटा सिपाही एहि मंदिरक सुरक्षा व्यवस्थामे लगाओल गेल छी।

मंदिरक ओसारापर एकटा बैसल व्यक्तिसँ पुछलापर कहलनि जे मंदिरमे पुजारीजी कियैक रहताह? एतय की भेटतनि? ओ तँ भरिदिन चौकेपर रहैत छथि। जे कोनो गाड़ीवला चौकसँ पार करैत छैक, तँ पुजारीजी ओकरा माला दैत छथिन आ बदलामे किछु दक्षिणा भेटि जाइत छनि। ई गप्पसभ होइते छल कि तावत ऊँचका बान्हपर एकटा सिपाहीजी चौक दिस जाइत देखेला। नीचाँक सिपाहीजी जोरसँ आवाज देलथिन जे पुजारीजीकें चौकपर सँ पठाउ। एमहर सुशान्तजी सेहो पुजारीजीकें ताकऽ ले' विदा भेलाह। किछुकालक बाद पुजारीजी एलाह। हुनकासँ आग्रह कएल जे भगवानक दर्शन कराओल जाए। पुजारीजी मंदिरक दूटा गेटमे पैघ-पैघ ताला ठोकने छलाह। बजलाह जे ग्रिलक बाहरेसँ दर्शन करू। हम आग्रह कएल जे ताला फोलल जाए आ भगवानक साफ-सफाइ कएल जाए। ओ हमर आग्रह मानि ताला फोललनि। फेर जतेक फूल, बेलपात, अक्षत आदि चढ़ल छलैक, तकरा हँटौलनि। जखन हम कहलियनि जे कपड़ा हटाउ, फोटो लेबाक अछि, तँ पुजारीजी मना करय लगलाह। फेर हम बुझौलियनि जे भगवान ओ भगवतीकें कारीगर अपनहिं पाथरक वस्त्र ओ आभूषण पहिरौने छनि, तें ऊपरसँ कपड़ाक कोनो आवश्यकता नहि। जखन पुजारीजीकें हम बुझा रहल छलहुँ, तँ सुशान्तजी इशारा कएलनि जे सर! अहाँ तँ बाटहिमे कहने रही जे ब्राह्मण पुजारी बड़ परेशान करैत छथि। ब्राह्मणेतर पुजारी ओ आन लोकसभ बेसी सहयोग करैत छथि अध्ययन करबामे।

अन्ततः पुजारीजी मानि गेलाह आ नहुँ-नहुँ वस्त्र हँटाबऽ लगलाह। उमा-महेश्वरक विलक्षण प्रतिमा एहि मंदिरमे स्थापित अछि। शंकर भगवान पार्वतीजीकें अपन बामा जाँघपर बैसौने छथि आ आलिंगन मुद्रामे छथि। शंकर भगवानक दहिना हाथ पार्वतीक दाढ़ी (ठुड्डी, ठोढ़ी)कें छूबि रहल छनि तँ बामा हाथ पार्वतीक बामा स्तनकें स्पर्श कऽ रहल छनि। मूर्तिक शिलापीठिकाक पाछू कटाओ अछि आ शीर्ष नोंकगर अछि। शीर्षपर जे आकृति बनल अछि, एखनधरि कतहु नहि देखल अछि। आन मूर्तिक शिलापीठिकाक शीर्षपर कीर्तिमुख वा फूल देखबामे अबैछ, मुदा एहन आकृति दुर्लभ अछि। शंकरक नीचाँमे नंदी आ पार्वतीक नीचाँमे हुनक वाहन सिंह बनल अछि। दुनूक बीचमे नीचाँ दिस भृंगी ऋषिक

नृत्य अंकित अछि। उमा-महेश्वरक मूर्तिपर नचैत भृंगी ऋषिक अंकन कम्मे भेटैछ। मूर्तिक लम्बाइ-चौड़ाइक माप (112x52 से.मी.) लेल गेल, मुदा मोटाइ नहि लेल जा सकल। मूर्ति सीमेंटसँ जाम कएल अछि मंदिरक ताखपर। मंदिरक आगूमे एकटा छोट शिवलिंग सेहो अछि। पुजारीजीक सहयोग लेल धन्यवाद देल आ कहलियनि जे पानि, सेनूर आ आन चढ़ौना सभसँ परहेज कएल जाए। आब हमसभ नवका थानापर गेलहुँ जे बान्हक पुबारी कात अछि। थाना प्रभारी नहि छलाह, एकटा कर्मचारी भेटलाह जे एहि मूर्तिक कथा सुनौलनि। हुनका अनुसारें ई मूर्ति 1985 ई.मे भेटल छल। थानाक पुबारी भाग स्थित धनछीया गामक एकटा ब्राह्मणक घरसँ चोर मूर्ति लऽकऽ भागल जा रहल छल। महथौर चौरमे पुलिसक नजरि पड़ल आ मूर्ति थाना आबि गेल। थाना प्रभारी थाना परिसर मे मंदिर स्थापित कऽ पूजा-पाठ आरम्भ कऽ देलनि। आब थानाक नव भवन दोसर ठाम बनि गेल। मंदिर पुरनके थानामे रहि गेल। सुरक्षाक समस्या ठाढ़ भेल तँ चारिटा सिपाही राखि देल गेल अछि।

ओहि थाना-कर्मीकें हम कहलियनि जे थाना प्रभारीकें पुलिस मैनुअलक अध्ययन करबाक चाहियनि छल। जँ ओ पढ़ने रहितथि तँ एहि प्रतिमाकें सरकारी संग्रहालयमे रखिथि। थाना वा मालखानामे मूर्ति राखब गैरकानूनी छैक। ओ कर्मचारी ऊहापोहमे पड़ि गेलाह जे आब की कएल जाए! एकटा थाना प्रभारीक अज्ञानताक कारणे सुरक्षाक समस्या उपस्थित भऽ गेल अछि। ओ पुछलनि जे आब संग्रहालयमे राखल जाए तँ की हर्ज? हम कहलियनि, आब कठिन अछि। सीमेंटसँ उखाड़क क्रममे मूर्ति क्षतिग्रस्त भऽ सकैछ। संगहिं स्थानीय लोकक विरोध सेहो हएत। फेर ओ कहलनि जे ओहि मंदिरसँ एहि थानामे आनल जाए; तँ फेर हम मना कएल जे क्षतिग्रस्त होयबाक समस्या अछि।

एहि तरहें हमरा लोकनि थानासँ विदा भऽ बान्ह पकड़ि भुतहा चललहुँ। बाटपर माटि-पाथर ततेक छल जे गर्दासँ हमसभ तोपा गेलहुँ। रौद सेहो तेहने प्रचण्ड। फुलपरास आबि फेर किछु रसगुल्लासँ पनपिआइ भेलैक। तत्पश्चात् सभगोटे अपन गन्तव्य स्थानपर वापस भेलहुँ।

एहिना 26 मार्च, 2022 कऽ भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षणक वरिष्ठ पुरातत्व वैज्ञानिक डॉ. जलज कुमार तिवारी, डॉ. सुशान्त कुमार ओ मुरारी कुमार झाक संग सहरसा जिलाक काँठो गामक मतेश्वरनाथ महादेवक दर्शन करऽ गेल रही। पछिला वर्ष एहिठाम सूर्यक दू गोट विलक्षण मूर्ति भेटल छल। ई दुनू मूर्ति सातम-आठम शताब्दीक छैक, जे एहि क्षेत्रक लेल दुर्लभ छैक। जिलाधिकारी, सहरसा ओ राज्यक पुरातत्व निदेशक महोदयसँ आग्रह कएने रही जे एहि मूर्तिसभकें संग्रहालयमे राखल जएबाक चाही। जिलाधिकारी महोदय गेलो रहथि देखबाक लेल, मुदा आनि नहि सकलाह। हमरा लो. कनि सूर्य भगवानक अतिरिक्त शिवलिंग एवं दोसर पुरावशेष सभक अवलोकन सेहो कएल। बुझना गेल जे एहिठाम पूर्व मध्यकालमे कोनो पैघ धार्मिक स्थल छल।

मंदिर समितिक अध्यक्ष रामावतार यादवजी कहलनि जे एकटा विष्णु भगवानक मूर्ति 2009 ई.मे भेटल छल जकरा थाना प्रभारी उठाकऽ लऽ गेलाह। हुनक नेतृत्वमे हमरा लोकनि बलवाहाट ओ.पी. गेलहुँ आ थाना प्रभारीसँ आग्रह कऽ मालखानामे बन्द विष्णु भगवानकें बाहर निकलबओलहुँ। मूर्ति भग्न छल, मुदा विलक्षण छल। बारहम-तेरहम शताब्दीक विष्णु भगवानक मूर्तिक आकार 46x14x8 से.मी. छल। भगवानक दुनू हाथ आ ठेहुनसँ नीचाँ दुनू पएर भग्न छनि। थानाध्यक्षसँ पुछलियनि जे कोन नियमसँ मूर्तिकें मालखजानामे रखने छी? ओ चुप भऽ गेलाह आ गोंगिआए लगलाह जे ओ नहि छलाह ताहि समयमे। पुछलनि, आब की कएल जाए? पुलिस मैनुअलक अनुपालन करबाक सलाह देलियनि।

गामवासी यादवजी मूर्तिकें उठाकऽ फेरसँ मतेश्वर स्थान मंदिर लऽ जाए चाहैत छलाह। हम सेहो गामक लोकसभक सोझाँमे किछु स्पष्ट कहएमे समर्थ नहि रही। अन्तमे हम सलाह देल जे जिलाधिकारीसँ निर्देश प्राप्तकऽ काज करू। ओना भग्न मूर्तिक पूजा निषेध छैक, तें संग्रहालयमे राखल जएबाक चाही। एहि तरहें थानाध्यक्ष कोनो साहस नहि कएलनि आ भगवान फेरसँ पुलिस कस्टडीमे रहिए गेलाह; मालखानामे पूर्ववत् बन्द।

किछु बर्ख पहिने दरभंगा जिलाक जाले थानान्तर्गत धनकौल गाममे विष्णुक मूर्ति भेटल छल। जाले थानाक नरौछ निवासी ललित शंकर झाक संग भगवानक दर्शन लेल पहुँचलहुँ। मुदा, गामक लोक कहलनि जे भगवान थानामे बन्द छथि। थाना पहुँचि थाना प्रभारीसँ आग्रह कएल तँ एकटा छोट मंदिर दिस संकेत करैत कहलनि जे ओहीमे भगवान छथि। जखन देखल तँ अवाक् रहि गेलहुँ जे भगवानकें साधारण गोल्डेन पेंटसँ पोतिकऽ कारी पाथरकें सोना सन बना देल गेल छैक। कोन कानूनक

अनुपालन थाना प्रभारी कएलनि, से नहि जानि सकलहुँ! भगवानक दुर्दशा देखि मोन अत्यन्त दुखी भऽ गेल। हमरा लोकनि भगवानकें पुलिस कस्टडीमे छोड़ि घुरि अएलहुँ।

एक बेर आर एहिना डॉ. जलज तिवारीजी सूचित कएलनि जे वैशाली जिलाक सराय थानान्तर्गत धरहरा गामक एकटा पोखरिसँ ब्रह्माक मूर्ति भेटल अछि। हाजीपुरक एकटा पत्रकार सेहो सूचित कएलनि जे भगवान सराय थानामे बन्द छथि। थाना प्रभारीसँ गप कएल आ डॉ. तिवारी, डॉ. अशोक कुमार सिन्हा (संग्रहालय निदेशालय) एवं अरविन्द कुमार सिंहक संग थाना पहुँचि थाना प्रभारीसँ आग्रह कएल जे मूर्ति देल जाए। नियमानुसार मूर्तिकें पुलिस कस्टडीमे नहि राखल जएवाक चाही। ओ मानि गेलाह आ भगवानकें छोड़ि देलनि। हमरा लोकनि विजयी भावसँ ब्रह्माजीकें उठाकऽ चेचर संग्रहालय, वैशालीमे राखि देल।

एहन-एहन कतेक ठाम कतेक देवी-देवता 'पुलिस कस्टडी'मे छथि, नहि पता। थाना प्रभारी लोकनिसँ आग्रह जे पुलिस मैनुअलक अनुपालन करैत ओ लोकनि मूर्तिकें सरकारी संग्रहालयमे जमा कराबथि। संगहिं आम जनतासँ सेहो सानुनय निवेदन जे मूर्ति भेटबाक एहन-एहन घटनाक सूचना अपन दायित्व बुझि ओ लोकनि स्थानीय संग्रहालय वा राज्य संग्रहालय निदेशालयकें अवश्य पठाबथि।

⊘

(पृष्ठ - 162 क शेषांश)

जयवर्द्धन तपाक दऽ पुछलनि – अएँ हौ भाइ, ओहि छौंड़ा-छौंड़ीक तकर बाद की भेलैक?

गज्जोभाइ बिगड़लाह – की भेलैक? से तों नहि बुझैत छह! दुहूक आपसी सहमतिसँ बिआह भेल। जमीन्दार सरकार ओकरा दुहूक सामाजिक स्तरक अनुकूल व्यवस्था केलनि। जमीन्दार साहेबक बरखों धरि गुणगान होइत रहलनि। तखन किछु कुकुर तँ भुकितहिं अछि – हाथी चलए बजार, कुकुर भुकए हजार। किन्तु क्यो पुनः जमीन्दार साहेबक सवारी रोकबाक दुस्साहस नहि केलक।

जयवर्द्धन पुनः जिज्ञासा केलनि जे तकर बाद दुहू छौंड़ा-छौंड़ीक की भेलैक?

गज्जोभाइ कहलनि – की हएत? दुहूक एक आश्रम भेल। दुहू रंग-रभस बिसरि गेल। बस एक चीज याद रहल – नोन-तेल-लकड़ी। समय पलटा खेलक। अठन्नीक के कहए? एकटकिआ-पँचटकिआ धरिक मोल घटि गेल। किछु दिनक बाद छौंड़ा कमेबाक हेतु दिल्ली-हरियाणा-कुरुक्षेत्र चलि गेल, से एखन धरि नहि लौटल।

जयवर्द्धन पुनः जिज्ञासा केलनि – तकर कते दिन भेल हएत?

गज्जोभाइ उत्तेजित भऽ गेलाह। ओ कहलनि – हम तोरे सन मूर्ख छी जे जिनगीक कैलेंडर राखब। ओम्हर फलना ओ चिलम्माक बान्ह जे टूटल, ताही बाढ़िमे कतहु भसिआ गेल। आब छौंड़ीक दिन पहाड़ आ राति प्रेतनुमा भेल छैक। छौंड़ी नित्य राष्ट्रीय राजमार्ग 1947 पर जाइत छैक, जतय दुनियाँक बस-ट्रक अबैत छैक। ओ ओहि संभावनासँ जाइत छैक जे ओ छौंड़ा कोनो-ने-कोनो दिन कोनो समय कोम्हरहुसँ अओतैक।

महाप्रकाशक एहि 'संभावना' कथामे कथाक प्रायः अधिकांश तत्त्वक निर्वहन भेल अछि। कथा-वस्तु रोचक अछि, कारण सरल ओ सरस भाषामे लिखल गेल अछि। फलतः पाठक एहि कथाकें चावसँ पढ़त। कथा-वस्तुक विस्तार जमीन्दार साहेब, देबानजी, फलना, चिलम्मा, गज्जोभाइ ओ जयवर्द्धनक परस्पर संवादसँ भेल अछि। छौंड़ा जतए अबंड अछि, छौंड़ीकें सेहो लोकक बाड़ी-झाड़ीमे फानबाक आदति अछि। अतः छौंड़ा ओ छौंड़ी – दुहूक चरित्र एकरंगाहे अछि। कथाक कथा-वस्तु देश ओ कालक अनुकूल अछि। समयमे परिवर्तन भऽ गेलैक अछि। पूर्वमे जे काज चौअन्नी ओ अठन्नीमे भऽ जाइत छल, से आब एकटकिआ-पँचटकिआमे सेहो नहि होइत अछि, कारण समयक अन्तरालमे क्रय-शक्ति घटि गेल अछि। कथाक उद्देश्य सेहो महत्त्वपूर्ण अछि, कारण जमीन्दार साहेबक अभीष्ट ओहि अबंड छौंड़ा ओ छौंड़ीकें नोन, तेल ओ लकड़ीमे लगाएब छलनि। कथाक नामकरण सेहो सार्थक अछि, कारण ओ छौंड़ी नित्य कोन संभावनासँ राष्ट्रीय राजमार्ग 1947 पर जाइत छलि, ताही केन्द्र-विन्दुपर कथाक सम्पूर्ण कथा-वस्तु केन्द्रित अछि। अतः 'संभावना' एक सार्थक कथा अछि।

⊘

देसिल बयना

देसिल बयना

मैथिली साहित्य मंच

(रजि. सं. 2056 / 12)

मिथिला विभूति पर्व स्मारिका

(जीवकान्त, मोहन भारद्वाज एवं
महाप्रकाश पर केन्द्रित)

आठम विशेषांक

हैदराबाद-सिकन्दराबाद

24 जुलाइ, 2022

देसिल बयना

देसिल बयना

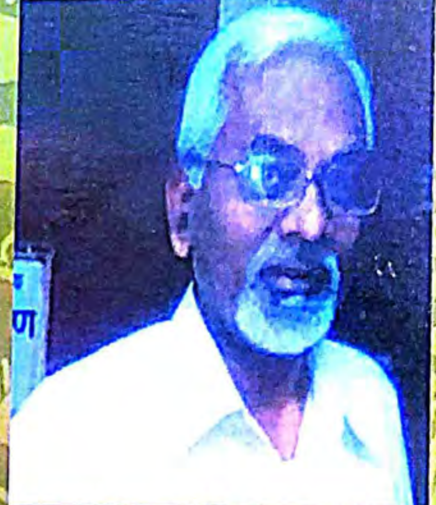
मैथिली साहित्य मंच



जीवकान्त
25.07.1936-11.09.2013



मोहन भारद्वाज
09.02.1943-24.07.2018



महाप्रकाश
03.11.1946-19.01.2013

मिथिला विभूति पर्व स्मारिका

(जीवकान्त, मोहन भारद्वाज एवं महाप्रकाश पर केन्द्रित)

आठम विशेषांक

हैदराबाद - सिकन्दराबाद

24 जुलाइ, 2022